आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/24-26

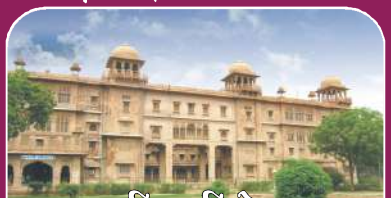

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 11 अंक : 12 अगस्त, 2024 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) सतीश के. गर्ग

कुलपति सन्देश

स्वदेशी गौवंश का खाद्य सुरक्षा में महत्वपूर्ण योगदान के कारण संरक्षण व संवर्द्धन आवश्यक: कुलपति

गाय वैदिक युग से ही भारतीय सभ्यता के केन्द्रीय प्रतीकों में से एक रही है तथा भारत में गाय को पवित्रता का प्रतीक माना गया है। देशी गाय सदियों से विविध संस्कृति और समाज का अभिन्न अंग रही है। भारत की खाद्य आत्मनिर्भरता और खाद्य सुरक्षा छोटे और सीमान्त किसानों पर निर्भर है। लघु व सीमान्त किसान अधिकांशतः पशुधन के साथ खेती करते हैं। इस प्रकार भारत की खाद्य सुरक्षा में पशुधन का बहुत बड़ा योगदान है। अभी भी भारत पशुओं की आबादी और दूध उत्पादन में सर्वोच्च स्थान पर है। भारत में 536.76 मिलियन पशुधन है इनमें से 193.46 मिलियन गायें व 109.85 मिलियन भैंसों की आबादी है तथा वर्ष 2022–23 में कुल 230.58 मिलियन टन दूध उत्पादन के साथ भारत विश्व का सबसे बड़ा दूध उत्पादक देश भी है। भारत में प्रति व्यक्ति एक दिन की दूध उपलब्धता 444 ग्राम है। भारत में गाय की 30 नस्लें अच्छी तरह से वर्णित है तथा गैर वर्णित नस्लों की संख्या भी कहीं अधिक है, ये स्वदेशी नस्लें जैसे साहीवाल, गिर, लालसिंधी, थारपारकर, राठी आदि दुधारू नस्लें हैं जो मुख्य रूप से राजस्थान में पायी जाती है। हरियाणा, अमृत महल, ओंगोल, मालवी, निमाड़ी, हल्लीकर, कंगायम, खिल्लारी, मेवाती आदि नस्लें अन्य राज्यों में उपलब्ध है। गौवंश की ये विशिष्ट नस्लें समय के साथ अपने–अपने क्षेत्रों की विशिष्ट पर्यावरणीय परिस्थितियों, उपलब्ध चारा संसाधनों और पारंपरिक कृषि पद्धतियों के अनुकूल ही विकसित हुई हैं। इन स्वदेशी नस्लों में विशिष्ट गुण मौजूद होते हैं जैसे दूध देने की क्षमता, चारे की उत्पाद में रूपान्तरण की क्षमता, भौगोलिक क्षेत्र के अनुरूप नैसर्गिक क्षमता आदि। स्वदेशी नस्लें जैव विविधता सरक्षण तथा भूमि प्रबंधन में भी अपना योगदान देती है। स्वदेशी नस्लें समाज के सांस्कृतिक ताने–बाने के साथ जुड़ी हुई है, ये आध्यात्मिक, आर्थिक और सामाजिक महत्व भी रखती है। इन सभी तथ्यों और भविष्य में अनुमानित जलवायु परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए गौजातिय पशुओं की स्थानीय नस्लों का संरक्षण बहुत अहम् है। राजस्थान भी देशी गौवंश के लिए प्रसिद्ध है, यहां पर आठ स्वदेशी गायों की नस्लें पायी जाती है। भारत सरकार ने देशी गौवंश के सरंक्षण, नस्लों में विकास और आनुवांशिक उन्नयन के लिए राष्ट्रीय गोकुल मिशन, राष्ट्रीय डेयरी योजना जैसी योजनाएं शुरू की है। विश्वविद्यालय भी देशी गौवंश के संरक्षण को बढ़ावा दे रहा है तथा राजस्थान में पायी जाने वाली देशी गौवंश जैसे राठी, थारपारकर, गिर, साहीवाल, मालवी, कांकरेज आदि के संरक्षण व संवर्द्धन हेतु पशुधन अनुसंधान केन्द्रों की स्थापना की गई है, जहां पर सरंक्षण व संवर्द्धन के साथ–साथ पशुधन उत्पादन के लिए उन्नत प्रजनन तकनीकों और चयनात्मक प्रजनन का उपयोग करके इनकी उत्पादकता बढ़ाने के प्रयास किये जा रहे हैं। अतः पशुपालक भाइयों को भी स्वदेशी गौवंश के साथ पशुपालन शुरू कर इनके संरक्षण व संवर्द्धक में अपना योगदान देना चाहिए।

प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार गर्ग

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।
–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

सप्तम् दीक्षांत समारोह का हुआ आयोजन
665 उपाधियों और 29 पदकों से किया विद्यार्थियों को अलंकृत

वेटरनरी विश्वविद्यालय के सप्तम् दीक्षांत समारोह में 29 जुलाई को पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान के 665 छात्र–छात्राओं को उपाधियों और 26 को स्वर्ण पदक तथा 01 कुलाधिपति स्वर्ण, 1 रजत एवं 1 कांस्य पदक से अलंकृत किया गया। समारोह के प्रारम्भ में माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री कलराज मिश्र ने संविधान की प्रस्तावना और मूल कर्तव्यों का वाचन किया जिसे सभी प्रतिभागियों ने मन में दोहराया। माननीय राज्यपाल ने वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के सप्तम दीक्षान्त समारोह की सभी को बधाई दी और कहा कि गुरुकुल शिक्षा के समय जो समावर्तन संस्कार है, वही आज का दीक्षांत समारोह है। उन्होने खुशी जताते हुए कहा कि देश की बेटियों न केवल शिक्षा के क्षेत्र में अपितु अन्य क्षेत्रों सेना, नेवी, एयर फोर्स, अन्य सेवाओं में निस्तर अपने आपको श्रेष्ठ साबित किया है। विश्वास है, आज जिन विद्यार्थियों को उपाधि एवं पदक प्राप्त हुए है वे अपने अर्जित ज्ञान के आधार पर पशुपालन, डेयरी और पशु चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में राष्ट्र और समाज को निरतर महत्वपूर्ण सेवाएं देंगे। पशु चिकित्सा विज्ञान भी प्राचीन काल में हमारे यहां अत्यन्त विकसित रहा है। देश की निरंतर बढ़ती मानव जनसंख्या, घटती कृषि जोत एवं पानी तथा अन्य प्राकृतिक संसाधनों की कमी मानव समाज के लिए एक बड़ी चुनौती है। यद्यपि हम खाद्य सुरक्षा की दृष्टि से आत्मनिर्भर हो गये हैं परंतु बढ़ती अधिक जनसंख्या की स्थिति में पशुधन एवं पशुधन उत्पाद हमारे लिए, विशेषरूप से प्रदेश के लिए, वरदान साबित हो सकते है। मैं यह मानता हूं कि नवीन प्रौद्योगिकी के माध्यम से पशु–सम्पदा रोग निदान और उपचार के साथ–साथ उनकी उत्पादक क्षमता बढ़ाने के लिए अधिक से अधिक प्रयास किये जा रहे है ताकि प्रदेश पशुपालन में तेजी से आगे बढ़ सकेगा। पशुपालकों को हम वैज्ञानिक तरीके से पशुधन संरक्षण के लिए प्रेरित करें एवं समसामयिक माँग के अनुरूप विश्वविद्यालय में जैविक पशुपालन और अनुसंधान क्षेत्र के साथ–साथ प्रसंस्करण व उद्यमिता कौशल कार्यों का विकास होना चाहिए। इससे युवाओं को स्वरोजगार के लिए प्रेरित किया जा सकेगा। समारोह के दीक्षांत अतिथि प्रो. नजीर अहमद गनई कुलपति, शेर–ए–कश्मीर कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कश्मीर ने छात्रों को बधाई देते हुए कहा कि विद्यार्थियों की कड़ी मेहनत व ज्ञान से आज उपाधियां प्राप्त की हैं, मुझे विश्वास है कि आप सभी उत्तरोतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होते रहेंगे। गाँवों का विकास कृषकों एवं पशुपालकों के विकास से ही संभव है तथा पशुपालकों की आय बढ़ाने से ही भारत की अंतिम छोर पर बैठे व्यक्ति का विकास संभव हो सकेगा। विगत 77 वर्षों में भारतवर्ष में दूध, मांस, अण्डे, अनाज व फलों का उत्पादन अत्यधिक बढ़ा है। यह अभूतपूर्व उपलब्धि देश में कृषि एवं अन्य विश्वविद्यालयों तथा आई.सी.ए. आर. के वैज्ञानिकों के सामुहिक योगदान को दर्शाती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति एन.ई.पी.–2020 के लागू होने से पशु चिकित्सकों व कृषि शिक्षा की गुणवत्ता में भी अपेक्षाकृत सुधार होंगे एवं कुशल तकनीक अपनाने से पशुपालन व कृषि के क्षेत्र में उत्पादकता बढ़ेगी। भारतीय अर्थव्यवस्था में पशुधन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। लगभग 20.5 मिलियन लोग अपनी आजीविका के लिए पशुधन पर निर्भर हैं। उन्होने विद्यार्थियों से कहा कि आपने यहां जो ज्ञान, समझ, मूल्य और तकनीकी योग्यता हासिल की है, वह आपको अपने जीवन में प्रदर्शन करने में सहायक होगी। उन्होने विद्याथियों को ध्येय बनाकर आगे बढ़ने एवं उद्यमीता अपनाने को प्रेरित किया। कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने महामहिम राज्यपाल श्री कलराज मिश्र, दीक्षांत अतिथि प्रो. नजीर अहमद गनई, प्रबंध मंडल एवं अकादमिक परिषद के सदस्यों, जनप्रतिनिधियों, विद्यार्थियों, अधिकारीयों एवं कर्मचारियों का स्वागत करते हुए कहा कि इस दीक्षांत समारोह के कुल 538 छात्र–छात्राओं को स्नातक, 106 को स्नातकोत्तर एवं 21 को विद्यावाचस्पति की उपाधि प्रदान की गई तथा 27 मेधावी छात्र–छात्राओं को विभिन्न पदकों से सम्मानित किया गया। कुलपति प्रो. गर्ग ने विश्वविद्यालय के प्रगति–प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। कुलपति प्रो. गर्ग ने डिग्री एवं मेडल प्राप्त विद्यार्थियों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। दीक्षांत समारोह के दौरान राज्यपाल के प्रमुख विशेषाधिकारी श्री गोविन्द जायसवाल, माननीय विधायिका सुश्री सिद्धी कुमारी, जिला कलेक्टर, बीकानेर श्रीमती नम्रता वृष्णि, जिला पुलिस अधीक्षक तेजस्विनी गौतम, कुलपति एस.के.आर.ए.यू. प्रो. अरूण कुमार, कुलपति एम.जी.एस.यू. प्रो. मनोज दीक्षित, श्रीमती मंजू गर्ग, श्रीमती अरूणा गहलोत, प्रबन्ध मंडल एवं अकादमिक परिषद के सदस्य, विश्वविद्यालय के सेवानिवृत शिक्षक एवं अधिकारी, विश्वविद्यालय के डीन–डायरेक्टर, शिक्षक, कर्मचारी, दीक्षांत विद्यार्थी एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। दीक्षांत समारोह को विश्वविद्यालय की वेबसाइट, फेसबुक पेज व यूट्यूब पर सीधा प्रसारित किया गया। इस अवसर पर माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति महोदय द्वारा "उद्देश्य, दृढ़ता और प्रगति– एक उल्लेखनीय यात्रा (2021–2024)" पुस्तिका, बकरी नस्ल "तोतापुरी" पुस्तिका, "विश्वविद्यालय वार्षिक रिपोर्ट: 2023", "सफलता की कहानी: पशुपालकों की जुबानी" पुस्तिका का विमोचन तथा वीडियों क्लिप : सी.वी.ए.एस., बीकानेर की 70 वर्षों की यात्रा" का प्रदर्शन किया गया इन प्रकाशनों के मुख्य सम्पादक प्रो. राजेश धूड़िया, प्रो. ए.पी. सिंह, प्रो. बसन्त बैस व डॉ. सुनीता पारिक थे। साथ ही सप्तम् दीक्षांत समारोह में प्रदान की गई समस्त उपाधियों को डिजी–लॉकर पर हस्तांतरित भी की गई।

प्रथम एल्यूमनि सम्मेलन एवं राष्ट्रीय संगोष्ठी का हुआ आयोजन

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के प्रथम एल्यूमनि सम्मेलन एवं "राजस्थान में पशुधन आधारित अर्थव्यवस्था का विकास एवं राजुवास की भूमिका" विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी 20 जुलाई को आयोजित की गई है। प्रथम एल्यूमनि सम्मेलन के उद्घाटन सत्र को सम्बोधित करने हुए मुख्य अतिथि पूर्व कुलपति राजुवास प्रो. ए.के. गहलोत ने कहा एल्यूमनि संगठन विश्वविद्यालय में 'थींक टेक' की तरह कार्य करें। जो कि समय–समय पर राज्य सरकार, केन्द्र सरकार एवं विश्वविद्यालय को विभिन्न विषय एवं नीति निर्धारण में अपनी विशेषज्ञ सुझाव एवं सलाह दे ताकि राज्य एवं देश में पशुपालन का विकास हो सके। कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने कहा कि किसी भी विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय के लिए एल्यूमनि संगठन एक सम्पदा एवं शक्ति के रूप में कार्य करती है एल्यूमनि एसोसिएशन को मजबूत सामंजस्य एवं संपर्क तंत्र विकसित कर विश्वविद्यालय विकास के कार्य करने चाहिए। प्रति कुलपति प्रो. हेमन्त दाधीच ने कहा कि महाविद्यालय एवं एल्यूमनि संगठन में परस्पर एक दूसरे के प्रति सहयोग एवं विकास के भाव होने चाहिए। अधिष्ठाता प्रो. ए.पी. सिंह ने कार्यक्रम के प्रारम्भ में सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम के आयोजन सचिव एवं प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया की राष्ट्रीय संगोष्ठी के दौरान तीन तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया जिसमे प्रो. ए.के. गहलोत, प्रो. आर.के. तंवर, प्रो. हेमन्त दाधीच, डॉ.एस.पी. जोशी, डॉ. आशीष चौपड़ा, डॉ. रमेश देधड़, प्रो. प्रवीण बिश्नोई ने राजस्थान की पशु आधारित अर्थव्यवस्था और राजुवास की भूमिका के विभिन्न आयामों पर प्रजेंटेशन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के दौरान जन संर्पक प्रकोष्ठ राजुवास द्वारा तैयार न्युजलेटर के नये अंक का विमोचन, पशु आपदा प्रबंधन तकनीकी केन्द्र द्वारा तैयार "तापघात से पशुओं का बचाव" विषय पर तैयार फोल्डर, पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट निस्तारण केन्द्र द्वारा तैयार फोल्डर का विमोचन किया गया। इस दौरान एल्यूमनि एसोसिएशन के 'प्रतीक चिन्ह' का भी विमोचन किया गया। कार्यक्रम के दौरान विश्वविद्यालय की प्रथम महिला श्रीमती मंजु गर्ग, श्रीमती अरूणा गहलोत, विश्वविद्यालय के डीन–डॉरेक्टर, सेवा निवृत शिक्षक, आई.सी.ए.आर. संस्थानो के वैज्ञानिक, पशुपालन विभाग बीकानेर के अधिकारी, कर्मचारी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

अकादमिक परिषद् एवं प्रबंध मण्डल की बैठक आयोजित

वेटरनरी विश्वविद्यालय की 28वीं अकादमिक परिषद् एवं 35वीं प्रबंध मण्डल की अलग अलग बैठक 28 जुलाई को कुलपति प्रो. सतीश के गर्ग की अध्यक्षता में कुलपति सचिवालय में आयोजित की गयी। बैठक में सप्तम् दीक्षांत समारोह में प्रदान की जाने वाली उपाधियों एवं स्वर्ण पदक, कुलाधिपति स्वर्ण पदक, रजत एवं कास्य पदकों का सदस्यों द्वारा अनुमोदन किया गया। बैठक में गत अकादमिक बैठक के विभिन्न मुद्दों का अनुमोदन भी किया गया। बैठक में सोमवार को आयोजित होने वाले दीक्षांत समारोह की तैयारियों एवं कार्यक्रम की रूपरेखा के बारे में भी परिषद् एवं बोम के सदस्यों को अवगत करवाया गया। बैठक में प्रबंध मण्डल के सदस्य प्रो. ए.के. गहलोत, प्रो. रुद्र प्रताप पाण्डे (मथुरा) कुलसचिव बिन्दु खत्री, वित्त नियंत्रक बी.एल. सर्वा, प्रो. ए.पी. सिंह, प्रो. हेमन्त दाधीच, प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, डॉ. एस.पी. जोशी, डॉ. सुचिस्मिता चटर्जी उपस्थित रहे। अकादमिक परिषद् की बैठक में डॉ. अतुल सक्सेना (मथुरा), डॉ. कुलदीप गुप्ता (लुधियाना) डॉ. आदर्श कुमार (पालमपुर), प्रो. शीला चौधरी, प्रो. आर. के. नागदा, प्रो. धर्म सिंह मीणा, प्रो. एस.के. शर्मा, वेटरनरी विश्वविद्यालय के डीन–डायरेक्टर तथा अकादमिक परिषद् के सदस्य उपस्थित रहे।

वेटरनरी कॉलेज परिसर में सघन वृक्षारोपण

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर में राजभवन के निर्देशानुसार "एक पेड माँ के नाम" अभियान के तहत 10 जुलाई को "एक विद्यार्थी–एक पेड" सघन वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने वेटरनरी कॉलेज परिसर में कोनोकार्पस का पौधा लगाकर कार्यक्रम की शुरूआत की तथा फैकल्टी सदस्यों एवं विद्यार्थियों को इनके संरक्षण हेतु प्रेरित किया। कुलपति प्रो. गर्ग ने कहा कि महाविद्यालय का परिसर स्वच्छ एवं हरा भरा है जिसका ना केवल हमें अपितु शहर के आस पास की कालोनियों के वरिष्ठ नागरिक भी इस स्वच्छ एवं ग्रीन कैम्पस का सुबह शाम लाभ उठाते है यह हम सभी का नैतिक कर्तव्य है कि हम हमारे आस पास के वातावरण को हरा भरा एवं स्वच्छ बनाये रखे। अधिष्ठाता प्रो. ए.पी. सिंह ने बताया कि दो दिवस तक सघन वृक्षारोपण कार्यक्रम तहत महाविद्यालय परिसर में विभिन्न स्थानो पर कुल 500 पौधे लगाये जायेंगे। जिसमें बकेन, गुलमोहर, शीशम, खेजड़ी, नीम, कोनोकार्पस आदि शामिल है। वृक्षारोपण कार्यक्रम के दौरान निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. प्रवीण बिश्नोई, शैक्षणिक, अशैक्षणिक कर्मचारी व विद्यार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम के आयोजन में लैंडस्कैप डॉ. मोहनलाल चौधरी का सहयोग रहा।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर द्वारा 11वीं वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक का आयोजन

वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के अन्तर्गत कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर की वार्षिक वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक का आयोजन दिनांक 6 जुलाई को कृषि विज्ञान केन्द्र परिसर में किया गया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो सतीश के. गर्ग ने कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा की जा रही गतिविधियों की प्रंशसा करते हुए कहा कि इस केन्द्र का क्षेत्र के कृषकों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा है तथा केन्द्र द्वारा आगामी समय में तकनीकी प्रसार व अनुसंधान के द्वारा कृषि के क्षेत्र में लाभप्रद आयाम स्थापित करने के प्रयास किये जायेगें। उन्होने केन्द्र की आगामी कार्य योजना को ओर अधिक व्यावहारिक और किसानों के अनुरूप बनाने का सुझाव दिया। इस अवसर पर उन्होनें नवीन बकरी पालन इकाई का उद्घाटन करते हुए कहा कि बकरी पालन स्वःरोजगार का सर्वोत्तम साधन है। पशुपालकों को वैज्ञानिक व व्यावसायिक दृष्टिकोण से करने पर ध्यान देना होगा। डॉ. जे.पी मिश्रा, निदेशक, अटारी, जोधपुर ने बैठक में कृषि विज्ञान केन्द्र फॉर्म पर मूंग, ग्वार व सरसों के बीज उत्पादन करने पर जोर दिया। साथ ही कृषि विज्ञान केन्द्र को ''एक केवीके एक उत्पाद'' पर कार्य करने के लिए निर्देश दिये। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने कहा कि कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर कृषकों, पशुपालकों, महिला किसानों व ग्रामीण युवाओं के हित में निंरतर कार्यरत है। इस अवसर पर डॉ. सुरेश चंद काटंवा, प्रभारी कृषि विज्ञान केन्द्र व अन्य विषय विशेषज्ञों ने गत वर्ष की उपलब्धि व आगामी कार्यरेखा प्रस्तुत की। वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक में उपस्थित विभिन्न विभागों के अधिकारियों, किसानों व महिला किसानों ने अपने सुझाव साझा किये तथा प्रस्तुत सुझावों पर समिति सदस्यों द्वारा विचार–विमर्श किया गया। आयोजित कार्यक्रम में क्षेत्रीय निदेशक अनुसंधान डॉ. विजयप्रकाश, संयुक्त निदेशक कृषि श्री सुभाष डूडी, श्रीमती प्रेमलता लाटा, बाल विकास परियोजना अधिकारी, नोहर, डॉ. कुलदीप सिंह नेहरा, प्रभारी अधिकारी, पशुधन अनुसंधान केन्द्र, नोहर, डॉ. निदेशक जांगीड़, पशुपालन विभाग, नोहर, डॉ. मुकेश कुमार, कृषि विज्ञान केन्द्र, सांगरिया, श्री साहबराम गोदारा, उद्यानिकी विभाग, हनुमानगढ़ श्री राजकुमार, लीड बैंक एवं कृषि विभाग के अधिकारी, प्रगतिशील महिला व किसान उपस्थित रहें।

विश्व जूनोसिस दिवस

52 श्वानों का हुआ रेबीज रोधी टीकाकरण

वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर में 6 जुलाई को कैनाइन वेलफेयर सोसाइटी वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर एवं इंडियन इम्युनोलॉजिकल लिमिटेड के संयुक्त तत्वावधान में 'विश्व जुनोसिस दिवस' के अवसर पर श्वानों के लिए एक दिवसीय निःशुल्क रेबीज वैक्सीनेशन शिविर का आयोजन वेटरनरी महाविद्यालय के क्लिनिक्स परिसर में किया गया। प्रो. प्रवीण बिश्नोई, निदेशक क्लिनिक ने बताया कि शिविर के दौरान कुल 52 श्वानों को निःशुल्क टीका लगाया गया एवं श्वान पालकों में रेबीज रोग के प्रति जागरूकता उत्पन्न की गई। इस आयोजन में डॉ. जे.पी कछावा, डॉ. सीताराम गुप्ता, डॉ. मनोहर सेन एवं पी.जी. व पीएच.डी. विद्यार्थियों का सहयोग रहा।

निबन्ध लेखन और पोस्टर प्रतियोगिता

वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर में 6 जुलाई को विश्व जूनोसिस दिवस के उपलक्ष में पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट निस्तारण एवं तकनीकी केंद्र व पशु जनस्वास्थ्य व जनपदिक रोग विज्ञान विभाग द्वारा विद्यार्थियों हेतु निबंध लेखन एवं पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विभागाध्यक्ष डॉ. दीपिका धुडिया ने बताया कि जूनोसिस रोगों एवं उनसे बचाव के बारे में जानकारी पशुओं के साथ–साथ मनुष्यों के स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए भी अत्यंत आवश्यक है। इस कार्यक्रम के दौरान सहायक आचार्य डॉ. देवेंद्र चौधरी एवं सहायक आचार्य डॉ. वैशाली ने भी पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट से उत्पन्न रोगों के बारे में बताया। प्रतियोगिता में कुल 48 छात्र–छात्राओं ने उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया।

यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पांसिबिलिटी

गाढ़वाला में पौधारोपण कार्यक्रम

वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए गए ग्राम गाढ़वाला में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के अभियान "एक पौधा मां के नाम" के अन्तर्गत 26 जुलाई को पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन वर्तमान समय में बहुत बड़ी चुनौती है जिसको अधिक से अधिक पौधे लगाकर कम किया जा सकता है। इसी के तहत आज गाढ़वाला में पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया है। यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पांसिबिलिटी के समन्वयक डॉ. नीरज कुमार शर्मा ने बताया कि कार्यक्रम में करंज, शीशम और सहजन के 50 पौधे लगाए गए तथा मातृशक्ति ने भी अपनी सहभागिता निभाई। इस अवसर पर ग्रामवासी जगमाल रायका, चेनाराम एवं अन्य गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ (श्रीगंगानगर)

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ (श्रीगंगानगर) द्वारा दिनांक 6 जुलाई को केन्द्र परिसर में तथा दिनांक 24 जुलाई को गांव पदमपुरा में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 85 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर)

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा दिनांक 8, 12, 15, 18 एवं 27 जुलाई को गांव जाटोली, मवई, सुन्दरावली, मोरोली एवं सीसवारा गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 88 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 6, 11, 15, 19 एवं 23 जुलाई को गांव भेसाक, नरसिंहगढ़, भागना, तोर, महाराजपुरा गांवों में तथा दिनांक 26 जुलाई को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 170 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर)

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 10, 23 एवं 27 जुलाई को गांव ढाणी भोपालाराम, काकड़वाला एवं कालू गांवो में तथा 6 जुलाई को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 107 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही द्वारा 4, 6, 16 एवं 19 जुलाई को गांव सिलोईया, इसरा, माकरोडा एवं पाडीव गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 80 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा दिनांक 6 जुलाई को गांव कोलसिया में तथा दिनांक 22 जुलाई को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों से 53 पशुपालक एवं कृषक लाभान्वित हुए।

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा दिनांक 5, 10, 12, 16, 18 एवं 26 जुलाई को गांव रानीपुरा, नगपुरा, चींसा, चैनपुरा, रोटेदा एवं किशनपुरा–तकिया गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 147 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर)

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर) द्वारा 1, 15, 16, 26 एवं 27 जुलाई को गांव रताऊ, गेनाना, रींगन, पाटन एवं अजवा गांवों में तथा दिनांक 3 एवं 30 जुलाई को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 164 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक द्वारा दिनांक 2, 4, 9 एवं 16 जुलाई को गांव कुटका, बाओडी, लावा एवं रूपायली गांवों में तथा दिनांक 10 जुलाई को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 155 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा दिनांक 8, 9, 10, 16, 19 एवं 26 जुलाई को गांव को गांव बडौदा, पोईला फलां, महुआला, घाटी फलां, रामा एवं टोंकवासा गांवों में तथा दिनांक 5 एवं 6 जुलाई को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय एंव तीन दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 230 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा (चित्तौडगढ़) द्वारा दिनांक 18 जुलाई को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 52 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर (जयपुर) द्वारा 6, 8, 12, 26 एवं 27 जुलाई को गांव बस्सी झाझड़ा, चारणावास, ढाणी बोराज, प्रतापपुरा एवं झोटवाड़ा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 124 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा दिनांक 11, 26 एवं 29 जुलाई को गांव फेफाना, नयोलकी एवं रानीसर में एक दिवसीय तथा दिनांक 15–16, 18–24 एवं 25–29 को कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 152 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

बरसात के मौसम में पशुओं का प्रबंधन

बरसात के मौसम में वातावरण में जहां एक तरफ हरियाली बढ़ जाती है वहीं दूसरी ओर हमारे पशुओं में संक्रमण होने का खतरा भी बढ़ जाता है। बरसात के मौसम में तापमान के साथ–साथ आद्रता बढ़ जाने से पशुओ में अधिक तनाव देखा जाता है, इसके अलावा वातावरण में नमी होने के कारण सूक्ष्म जीव एवं परजीवी जीवों की क्रियाशीलता बढ़ने के कारण पशुओं के बीमार होने का खतरा अधिक रहता है। बरसात के मौसम में डेयरी पशुओं का स्वास्थ्य प्रबंधन निम्न प्रकार से कर सकते हैं:–

आवास प्रबंधन:–

- पशुशाला में अधिक नमी को कम करने के लिए पशु बाड़े में खिड़की और पंखे का प्रयोग कर सकते हैं जिससे पशु तनाव में नहीं आएगा। इस समय कूलर या फवारे का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
- पशु आवास में मक्खियों और मच्छरों के प्रवेश को रोकने के लिए खिड़कियां और दरवाजो पर जाली लगा देनी चाहिए।
- बारिश के समय बाड़े में गंदगी को ईकट्ठा नहीं होने दे। मल–मूत्र, गोबर और कीचड़ के निकास की उचित व्यवस्था होनी चाहिए।

पोषण प्रबंधन:–

- पशुओं को एक बार में एक साथ अधिक चारा खाने में न दे इससे पेट संबंधी समस्या हो सकती है।
- पशुओं को बाहर गड्ढे या जोहड़ का पानी नही पिलाना चाहिए क्योंकि इसमें फसलों में प्रयोग की गई कीटनाशक दवाइयो का रिसाव और अन्य संक्रमित पशुओं द्वारा संक्रमण फैलने की संभावना रहती है।
- बरसात के मौसम में पशुओं को बाहर नहीं चराना चाहिए क्योंकि विभिन्न प्रकार के परजीवी जीवो के संपर्क में पशु आ सकते है।

स्वास्थ्य प्रबंधन:–

- बरसात के दौरान अतःपरजीवीयो का प्रकोप बढ़ जाता है इसके लिए समय–समय पर कृमी नाशक दवा पशुचिकित्सक की देख–रेख में पशुओं को देनी चाहिए।
- दुधारू पशुओं में थनैला रोग होने की संभावना रहती हैं इसके लिए मैस्टाइटिस रोग के रोकथाम के उपाय करने चाहिए और दूध की जांच समय–समय पर करवाते रहना चाहिए।
- पशुओं के खुरो की नियमित रूप से सफाई करें।
- पशु चिकित्सक की सलाह से पशुओं में नियमित रूप से चिंचड़ का नियंत्रण करें।
- मानसून से पहले गाय और भैंसों में गलघोंटू, खुरपका–मुहपका और लंगड़ा बुखार आदि का टीकाकरण करना चाहिए।

टीकाकरण के समय रखी जाने वाली सावधानियां:–

- टीका हर पशु को अलग–अलग सुई से लगाना चाहिए।
- पशुओं को लगने वाला टीका 2–8 डिग्री सेल्सियस (बर्फ में) पर रखा हो।
- पशु को लगने वाले टीके का रिकॉर्ड रखें।
- टीकाकरण से 2–3 दिन पहले पशुओं को पेट के कीड़ों की दवाई अवश्य दें।
- कमजोर, बीमार, वृद्ध, ग्याभिन पशुओं को टीकाकरण ना करवायें।

डॉ. मैना कुमारी, डॉ.मनीष कुमार
पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़

लंगड़ा बुखार एक संक्रामक रोग

यह रोग मुख्यतः बड़े पशुओं जैसे गाय, भैंस, भेड़ इत्यादि में देखने को मिलता है। यह एक जीवाणु जनित रोग है। मुख्य रूप से यह गायों में ज्यादा देखने को मिलता है। यह एक संक्रामक बीमारी है। यह रोग प्रायः सभी स्थानों पर पाया जाता है लेकिन गर्म व नम जलवायु वाले प्रदेशों में ज्यादा पाया जाता है। बरसात के मौसम में यह रोग ज्यादा फैलता है और इस रोग से मृत्यु दर भी ज्यादा रहती है। पशुपालक इसे लंगड़ा बुखार के नाम से भी जानते हैं। इस रोग में कंधे व पुठे की मांसपेशियों में गैस भर जाने के कारण सूजन आ जाती है व तेज बुखार और सेप्टिसिमिया के कारण पशुओं की मृत्यु तक हो जाती है। पशुपालकों को इस रोग की जानकारी के अभाव के कारण बहुत आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ता है।

रोग कारक:

यह एक जीवाणु जनित रोग है जो कि क्लोस्ट्रीडियम चौवाई नामक जीवाणु से होता है। यह एक ग्राम पॉजिटिवए तथा राडॅ के आकार का जीवाणु है।

लक्षण:

- पशु को तेज बुखार देखने का मिलता है।
- पशु खाना–पीना एवं जुगाली करना बंद कर देता है।
- रोगी पशु के कन्धे, गर्दन, जांघ अथवा पुठे पर सूजन आ जाती है तथा इस सूजन वाले हिस्से को दबाने पर चर–चर की आवाज आती है।
- रोगी पशु की आंखे लाल हो जाती है।
- रोगी पशु अचानक लंगड़ाने लगता है और उसकी चाल में अकड़न आ जाती है जिसके साथ ही वह एक स्थान से आगे बढ़ने की कोशिश भी नहीं करता।
- प्रारम्भ में पशुओं के सूजन गर्म व पीड़ादायक होती है लेकिन बाद में ठंडी व पीड़ारहित होती है।
- पशुओं के कंधे व पुठे की मांसपेशियों में सूजन के यदि चीरा लगाया जाये तो उसमें से झागदार काला एवं दुर्गन्धयुक्त स्त्राव निकलता है।
- अन्त में पशु का तापमान गिरने लगता है तथा पशु की मृत्यु हो जाती है।
- कई बार रोगी पशु बगैर कोई लक्षण दिखाये भी मर सकता है।

रोकथाम व नियंत्रण:

- यह रोग एक संक्रामक रोग है इसलिए रोगी पशुओं के आसपास रहने वाले सभी पशु संक्रमित हो सकते हैं और इस रोग का जीवाणु मिट्टी में भी रहता है अतः रोगी पशु को स्वस्थ पशुओं से दूर रखना चाहिए तथा अलग रखकर ही रोगी पशु का उपचार करना चाहिए।
- वर्षा ऋतु शुरू होने से पहले पशुओं का टीकाकरण करवाना चाहिए।
- 3 माह के बाद वाले सभी पशुओं को टीका लगवाना चाहिए।
- पशुओं के आवास की सम्पूर्ण रूप से साफ–सफाई एवं निस्संक्रामक दवाइयों का उपयोग करना चाहिए।
- समय–समय पर पशुचिकित्सकों द्वारा पशुओं की स्वास्थ्य जांच करवाना चाहिए।
- पशु के भोजन, पानी एवं दवाइयों का उचित प्रबंधन करना चाहिए।
- पशुओं के आवास में नमी, प्रकाश आदि व्यवस्थाओं का पूर्ण रूप से ध्यान रखना चाहिए।

डॉ. प्रमोद कुमार, डॉ. विनय कुमार
पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

पशुओं से मनुष्य में फैलता है चागास रोग (अमेरिकन ट्रिपैनोसोमियोंसिस)

चागास रोग परजीवी जनित संक्रामक रोग है जो कि प्रोटोजोआ परजीवी (ट्रिपेनोसोमा क्रूजी) के कारण होता है। यह प्रोटोजोआ ट्रायटोमाइन बग के मल में पाया जाता है जिसे किसिंग बग के नाम से भी जाना जाता है। इस रोग का नाम ब्राजील के चिकित्सक और शोधकर्ता कार्लोस चागास के नाम पर रखा गया है, जिन्होनें 14 अप्रेंल, 1909 को पहली बार किसी व्यक्ति में इस रोग का निदान किया था अतः 14 अप्रेल को विश्व चागास रोग दिवस मनाया जाता है।

चागास रोग का कारण एवं संचरणः

- चागास रोग का कारण परजीवी ट्रिपेनोसोमा क्रूजी है जो ट्रायटोमास बग या किसिंग बग नामक कीट से फैलता है। यह बग मुख्यतया घरों व गोदामों की दीवारों, छतों की दरारों, मुर्गीघर व बाड़े की दीवारों की दरारों में पाये जाते हैं।
- किसिंग बग के संक्रमित व्यक्ति या पशु (जैसे श्वान, बिल्ली, चूहे व अन्य पशुओं) को काटने से यह रोग सबसे अधिक फैलता है। जब संक्रमित बग किसी व्यक्ति या पशु को काटते है तो जिस जगह पर बग काटता है उस स्थान पर बग अपना मल जमा करते है जिसमें ट्रिपेनोसोमा परजीवी पाया जाता है, इसके अलावा इसका संक्रमण परजीवी से संक्रमित बग के मल से दुषित कच्चा भोजन खाने से व प्रयोगशाला में काम करते समय गलती से परजीवी के सम्पर्क में आ जाने से भी फैलता है।
- इसके अलावा इस रोग का संचरण जन्मजात, गर्भावस्था के माध्यम से, रक्त/रक्त उत्पादों से, अंग प्रत्यारोपण व प्रयोगशाला दुर्घटनाओं के माध्यम से भी हो सकता है।

चागास रोग के लक्षणः

संक्रमित व्यक्ति व पशुओं में इस रोग के लक्षण मुख्यतया दो चरणों में दिखाई देते है– **तीव्र चरण एवं जीर्ण चरण।**

- **तीव्र चरणः** चागास रोग का तीव्र चरण जो कई सप्ताह या महीनों तक रहता है। हालांकि रक्त में बड़ी संख्या में परजीवी प्रसारित होते हैं लेकिन ज्यादातर मामलों में लक्षण अनुपस्थित या हल्के होते हैं जिनमें संक्रमण स्थल पर सूजन, बुखार, थकान, शरीर में दर्द, उल्टी–दस्त, भूख की कमी, श्वास लेने में कठिनाई, बढ़ी हुई लिम्फ ग्रंथियां एवं आंखों की पलकों की बैंगनी सूजन शामिल है। इस चरण के दौरान विकसित होने वाले लक्षण आमतौर पर अपने आप ही चले जाते है परन्तु गंभीर मामलों में ये लक्षण जीर्ण चरण में आगे प्रवेश कर जाते हैं।
- **जीर्ण चरणः** इस अवस्था में परजीवी मुख्य रूप से हृदय व पाचन मांसपेशियों में छिपे रहते हैं जिस वजह से संक्रमित व्यक्ति या पशु की दिल की धड़कन अनियमित हो जाती है। तत्रिंका तंत्र सम्बन्धी विकार उत्पन्न हो जाते हैं व गंभीर स्थिति में इलाज ना मिलने की वजह से संक्रमित पशु या व्यक्ति की मृत्यु भी हो सकती है।

निदान एवं उपचारः

- इस रोग के निदान के लिए संक्रमित व्यक्ति का रक्त परीक्षण करके माइक्रोस्कोप द्वारा रक्त में परजीवी को देखा जाता है।
- चागास रोग के लिए वर्तमान में कोई टीका उपलब्ध नहीं है लेकिन एंटीपैरासिटिक दवाओं से इस रोग का उपचार किया जा सकता है।

रोकथामः

- संक्रमण की रोकथाम के लिए घरों व आसपास के क्षेत्रों, पशुशाला एवं मुर्गीघरों में कीटनाशकों का छिड़काव करें।
- दीवारों की दरारों को भरना, फूस की छतों को बदलना व मरम्मत से किसिंग बग की संख्या को कम करने में मदद मिल सकती है।
- खाने–पीने की वस्तुओं को ढक कर रखें क्योंकि खुली चीजो पर बग अगर अपना मल–मूत्र कर दें तो भोजन दूषित हो जाता है जो कि रोग के संचरण का काम कर सकता है।

डॉ. दीपिका धूड़िया
सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

सफलता की कहानी

किसान उत्पादक कंपनी डेयरी को दुग्ध विक्रय करते है देवीसिंह

कुम्हेर तहसील के गांव घाटा के निवासी देवीसिंह किसान परिवार से है, जिन्होंने पशुपालन को अपनी आजीविका का साधन बनाया। देवीसिंह शुरू से ही खेती तथा पशुपालन पर आश्रित थे। ये पीढ़ी दर पीढ़ी से पशुपालन कर रहे हैं लेकिन पिछले कई वर्षो में उन्होंने पशुपालन पर अपना ध्यान केंद्रित किया तथा पशु विज्ञान केंद्र, कुम्हेर से समय–समय पर प्रशिक्षण प्राप्त कर वैज्ञानिक तरीके से भैंस एवं गाय पालन कर रहे हैं। समय के साथ–साथ दूध की उपयोगिता एवं बाजार की जरुरत को ध्यान में रखते हुए भैंस एवं गाय पालन को डेयरी व्यवसाय के रूप में शुरू किया। ये अपने पशुओं से दूध संगृहित करके किसान उत्पादक कंपनी (एफपीसी) की सखी डेयरी को बेचते हैं। उनका कहना है कि जो बचत उन्हें पशुपालन से हो रही हैं, उतनी कृषि से नहीं होती। देवीसिंह के पास 10 भैसें और 5 गायें हैं, जिनसे प्रतिदिन 90 लीटर दूध का उत्पादन कर रहे हैं। इस दूध को वे प्रतिदिन 4500 रूपये में बेचकर लगभग 2000 रूपये की बचत प्रतिदिन कर रहे हैं। उनकी सालाना आय 8–9 लाख हो रही है। जमीन कम होने के कारण हरा चारा तो अपने खेत में पैदा करते हैं। देवीसिंह समय–समय पर पशुपालन की उन्नत तकनीकों की जानकारी लेने के लिए पशु विज्ञान केंद्र, कुम्हेर द्वारा आयोजित प्रशिक्षणों में भी भाग लेते हैं। देवीसिंह बताते है कि प्रशिक्षण से प्राप्त पशुपालन के क्षेत्र में नवीनतम व उन्नत तकनीकों की जानकारी अन्य पशुपालकों को भी देते हैं। प्रशिक्षण के दौरान कृमिनाशक दवा का उपयोग, खनिज लवण की उपयोगिता, टीकाकरण, संतुलित आहार, ग्याभिन पशुओं की देखभाल, मौसमी बीमारियों के बचाव, कृत्रिम गर्भाधान से नस्ल सुधार एवं पशु बाँझपन की समस्याओं का प्रबंधन की जानकारी प्राप्त की। देवीसिंह अपने डेयरी व्यवसाय में सफलता का श्रेय अपने परिवारजनों एवं तकनीकी सहयोग पशु विज्ञान केंद्र, कुम्हेर को देते हैं।

सम्पर्कः श्री देवीसिंह
गांव घाटा तहसील कुम्हेर (मो.नं. 869683931)

निदेशक की कलम से...

पशुओं में बांझपन से पशुपालकों को हो रहा है आर्थिक नुकसान

पशुओं में बांझपन डेयरी फार्मिंग और डेयरी उद्योग में बड़े नुकसान के लिए जिम्मेदार है। बांझ पशु को पालना पशुपालक पर एक आर्थिक बोझ होता है। बांझपन की वजह से पशुओं की दूध उत्पादन क्षमता भी काफी कम हो जाती है। पशुओं में अस्थायी रूप से प्रजनन क्षमता के घटने की स्थिति को बांझपन कहते हैं। बांझपन के कारण दुधारू पशुओं में ब्यांत अंतराल बढ़ जाता है। सामान्यतः यह कहा जाता है कि पशु प्रसव के 45–60 दिनों के बीच ताव में आ जाना चाहिए तथा लगभग 90–100 दिनों के अन्दर ग्याभिन हो जाना चाहिए। पशुओं में बांझपन सामान्यतया कुपोषण, संक्रमण, जन्मजात दोषों, कुप्रबंधन तथा अण्डाणुओं या हारमोन के असतुंलन तथा पोषण की कमी के कारण होता है। सामान्यतया खनिज तत्वों और जिंक की कमी से पशु गर्भित नहीं होते हैं। गाय व भैंस 18–21 दिन में ताव में आती है तथा ताव की अवधि 18–24 घण्टे के लिए होती है। कुछ पशु ताव के लक्षण दिखाते है तथा कुछ पशु ताव के लक्षण नहीं दिखाते है। ऐसी स्थिति में पशुपालक को पता भी नहीं लगता है जो कि कई बार पशुओं में गर्भित नहीं होने के कारण बन जाता है। अतः किसान व पशुपालक भाईयों को दिन में 4–5 बार पशुओं की सघन निगरानी करनी चाहिए। पशुओं में बांझपन की समस्या से बचने के लिए ऊर्जा युक्त आहार के साथ प्रोटीन खनिज लवण और विटामिन की पूर्ति हेतु संतुलित आहार देना चाहिए। उचित आहार देने के बाद भी पशुओं में बांझपन की समस्या आ रही है तो पशु का उचित समय पर पशुचिकित्सक से उपचार करवाना चाहिए। पशुओं को छः माह में एक बार कृमिनाशक दवा देनी चाहिए। पशु के जननांगों में कोई व्याधि है तो उन पशुओं को प्रजनन समूह से बाहर निकाल देना चाहिए। यदि पशु की बच्चेदानी (गर्भाशय) में किसी प्रकार का संक्रमण है तो पशुचिकित्सक की निगरानी में सही प्रतिजैविक औषधि वाच्छित समय अवधि तक पशुओं को देनी चाहिए। इस प्रकार पशुपालक भाई अपने पशुओं को उचित पोषण व खनिज लवण मिश्रित आहार देते रहें ताकि पशुओं के बांझपन की समस्या से होने वाले नुकसान से बचा जा सके।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

"धीणे री बात्यां"
पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम
माह के तीसरे गुरुवार को
सायं 5.30 से 6.00 बजे तक
प्रदेश के 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण
आकाशवाणी

पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने के लिए
टोल फ्री हैल्पलाईन
1800 180 6224

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया
संपादक
डॉ. दीपिका धूड़िया
डॉ. मनोहर सैन
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली

प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

....

....

....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया